भूमण्डल पर सच्ची गीता के प्रचारक

ब्रह्माकुमार राम लखन, शान्तिवन—आबू रोड़
(राज.)

शिव के सच्चे गीता ज्ञान के प्रचारकों का स्वभाव दिव्य गुणों से भरपूर होना चाहिये। दिव्य गुणधारी विनोदी, क्रीड़ाशील, प्रसन्नचित, विजयकांक्षी होता है। हमें प्रशंसनीय, प्रकाशपुंज, आत्मविश्वासी, आनन्द वृत्तिवाला, महत्वाकाँक्षी (स्वप्न द्रष्टा) प्रगतिशील, शोभनीय, विद्वान, जितेन्द्रिय, अवसर और परिस्थिति को परखने वाला, ज्ञानी, सभ्य, ज्ञान—गुण—विद्या को ग्रहण करने वाला, गुण—ज्ञान—विद्या—औरों को भी दान करने वाला होना चाहिये। देव पद पाने वाली आत्मायें ऐसे गुणों से सदा ही समलंकृत रहती हैं। उन्हें ज्ञान—योग—धारणा—सेवा की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिये। ईश्वरीय ज्ञान सुनाने में पूर्ण पारंगत होना चाहिये जो राजयोग के मर्म को सही रीति से नहीं समझता वह ईश्वरीय सेवाधारी कैसे बन सकता है ? उसे सौभ्य और आकर्षक होना भी बहुत जरूरी है। मुखाकृति भी मनोहारी बना कर रखनी चाहिये। उसे देदीप्यमान—तेजस्वी, कान्तिमान—कमनीय और भव्य भी होना चाहिये। विजय की भावना से सदा ओत—प्रोत रहना चाहिये। आनन्द वृत्ति वाला, व्यवहार कुशल, उपायज्ञ, प्रशंसनीय और प्रगतिशील होने के अतिरिक्त उसे आचारवान, चरित्रवान तथा सदाचारी भी होना चाहिये। देवत्व की मुख्य पहचान है मन—बचन—कर्म की एकरूपता। विचार बचन और आचार की समता बिना, रूहानी सेवाधारियों में स्थायित्व नहीं आ सकता है।

सच्चा सेवाधारी डबल अहिंसक होता है। वह न काम कटारी चलाता न की क्रोध ही हिंसा करता है। वह न किसी को मूर्ख बना सकता न चिढ़ा सकता और न ही सताने की भावना रखता है। सताना—चिढ़ाना शालीनता का परिचायक नहीं है। हमें सर्व आत्माओं को परमात्मा का परिचय देना है तो परमात्मा की परम पावन संस्कृति से सभी को सुसंस्कृत करना होगा। माँ भारती को तभी हम स्वर्ग बना सकते हैं। इसलिये न हमें हिंसक साधनों के अवलम्बन की आवश्यकता है और न ही घात—प्रतिघात करने की । यह वेहद का उदार और विशाल कार्य ओछे साधनों से सम्पन्न हो नहीं सकता। इसलिये न किसी को बहकाओ न ही खण्डन—मंडन में जाओ। वाद—विवाद खण्डन—मण्डन, आलोचना—समालोचना से न कभी समाधान मिला है और न ही मिलेगा।

दैवी संस्कृति के प्रचार—प्रसार की शैली ऐसी होनी चाहिये कि हमारे शब्द—कृत्य—भाषण और व्यवहार से किसी को ठेस नहीं पहुँचे। हमारे प्रति उनमें

प्रतिकूलता न आने पावे। प्रतिकूलता आते ही वे हमारे विरोधी तो होंगे ही दूर चले जायेंगे। प्रचार की शैली ऐसी होनी चाहिये कि हमारे शब्द और कर्म से औरों को समाधान मिले। हमारे प्रति उनमें आदर और अनुकूलता पैदा होने लगे। हमारे प्रशंसक होकर वे हमारे प्रति आकृष्ट होने लगें। ईश्वरीय उपलब्धियों के लिये हमें भद्र और शालीन भी होना चाहिये। सच्चा प्रचारक बनने के लिये प्रथम हम ईश्वरीय इशारों के प्रमाण अपना आचरण बनावें। मुरली (ज्ञान) के महाकाव्यों के अनुसार व्यवहार करें और करायें। आचरण के अनुसार किया गया प्रवचन कानों को चीरता हुआ दिल में पैठ बना लेता है। आचरण प्रमाण उपदेश ही चिरस्थायी परिणाम देते हैं ईश्वरीय महावाक्यों से ही यह धरा पुन: स्वर्ग बनेगी। अन्यथा आचार विहीन सेवाधारी नाटक के अभिनेताओं की तरह बन जाते हैं। दर्शकों—श्रोताओं को रिझा तो सकते पर उनकी आत्मा को वन्दन—पूजन योग्य नहीं बना सकते हैं। सत्य बोलने का विषय है तो धर्म आचरण करने का। आज तो लोग सत्य और धर्म दोनों को ही वाणी का विषय बना लिये हैं। सच में यह भयंकर अपराध है। आचरण ही परम धर्म है। सत् आचरण से ही सत् धर्म की स्थापना होती है।

आचारहीन आत्मा को भगवान भी पावन नहीं बना सकता है। आचारवानों, नेक इन्सानों को ही परमात्मा पवित्र बनाते हैं। ईश्वरी महावाक्यों का अनुशीलन करते हुये पहले स्वयं को आचरण में उतारें। ब्रह्मावत्सों के आचार—व्यवहार को देख कर ही संसार दैवीय संस्कृति में आस्था—अनास्था बनायेगा। हमें पक्ष—विपक्ष दोनों के ही साथ घुलमिल कर रहना चाहिये। द्वेष—घृणा से न हम दूसरों को अपनें में प्रविष्ट करा सकते और न ही पचा सकते हैं। सामाजिक व्यवहार में सहयोगी बनकर ही हम ईश्वरीय सेवा का पथ प्रशस्त कर सकते हैं। इसके लिये हमें जाति—पाँति, देश प्रान्त, काला—गोरा—भाषा भेद की दीवारों से पार होना होगा। इध ार—उधर, झांका—झुकी करने से कुछ भी नहीं मिलेगा। सहयोग—साधन और अवसर कार्य क्षेत्र पर उतरने पर स्वत: मिलने लगते हैं। जनता को अपने आचरण और उच्चारण से प्रभावित कर हर तरह के लोगों के साथ लेते हुये आइये विश्व गगन में सत्यं—शिवं—सुन्दरम् का झंडा

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com